Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. XI, Issue No. XXI, Apr-2016, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

नरेन्द्र कोहली के तोड़ो कारा तोड़ो का विश्लेषणआत्मक अध्यन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. XXI, April-2016, ISSN 2230-7540

नरेन्द्र कोहली के तोड़ो कारा तोड़ो का विश्लेषणआत्मक अध्यन

Manoj Tiwari*

Hindi Litrechure

----------x----------

भूमंडलीकरण की 21वी सदी में वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाली पीढ़ी के लिए "तोड़ो कारा तोड़ो" एक नया मार्ग दर्शन स्थापित करती है, जिसका प्रस्थान बिंदु है- विवेकानंद का व्यवहारिक दर्शन| आत्मिक विकाश के लिए सामाजिक धार्मिक रूडीयोऔर जड़ताओ को दूर करना आवश्यक है|

स्वामी विवेकानंद ने पश्चिमी देशो में भारत की आध्यात्मिक संस्कृति का जो परचम लहराया वह वर्तमान संधर्व में अत्यंत प्रासंगिक है, ऐसा न हो कि भारतीय युवा GATT, WTO के बंधनों में बधकर अपनी अस्मिता ही खो बैठे| नरेन्द्र कोहली ने इस खतरे से बचने के लिए "तोड़ो कारा तोड़ो" में कुछ मूलमंत्र दियें है|

"तोड़ो कारा तोड़ो" की कथा सौ वर्ष पुरानी है, इसीलिए यह पौराणिक उपन्यास के बदले एतिहासिक उपन्यास ही कहा जायेगा जिसमे प्राचीन जमीन पर कोहली के विचारो का नया पुष्प विकसित हुआ है|

पिछले दस वर्षों में लोकप्रियता के नए कीर्तिमान स्थापित करने वाली रचना तोड़ो, कारा तोड़ो नरेन्द्र कोहली की नवीनतम उपन्यास-श्रृंखला है। यह शीर्षक रवीन्द्रनाथ ठाकुर के गीत की एक पंक्ति का अनुवाद है। किंतु उपन्यास का संबंध स्वामी विवेकानन्द की गाथा से है। स्वामी विवेकानन्द का जीवन बंधनों तथा सीमाओं के अतिक्रमण के लिए सार्थक संघर्ष थाः बंधन चाहे प्रकृति के हों, समाज के हों, राजनीति के हों, धर्म के हों, अध्यात्म के हों।

नरेन्द्र कोहली के ही शब्दों में, ''स्वामी विवेकानन्द के व्यक्तित्व का आकर्षण...आकर्षण नहीं, जादू....जादू जो सिर चढ़कर बोलता है। कोई संवेदनशील व्यक्ति उनके निकट नहीं रह सकता।...और युवा मन तो उत्साह से पागल ही हो जाता है। कौन-सा गुण था, जो स्वामी जी में नहीं था। मानव के चरम विकास की साक्षात् मूर्ति किसी एक युग, प्रदेश संप्रदाय अथवा संगठन के साथ बाँध देना अज्ञान भी है और अन्याय भी।'' ऐसे स्वामी विवेकानन्द के साथ तादात्म्य किया है नरेन्द्र कोहली ने। उनका यह उपन्यास ऐसा ही तादात्म्य करा देता है, पाठक का उस विभूति से।

हजारीप्रसाद द्विवेदी की विश्लेषण दृष्टि का नरेन्द्र कोहली पर प्रभाव:

प्रायः छह-सात दशकों के पश्चात् आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक अवदान का मूल्यांकन करते समय अब एक प्रमुख तथ्य उसमें और जोड़ा जा सकता है। आचार्य द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य में एक ऐसे द्वार को खोला जिससे गुज़र कर नरेन्द्र कोहली ने एक सम्पूर्ण युग की प्रतिष्ठा कर डाली .यह हिन्दी साहित्य के इतिहास का सबसे उज्जवल पृष्ठ है और इस नवीन प्रभात के प्रमुख वैतालिक होने का श्री अवश्य ही आचार्य द्विवेदी का है जिसने युवा नरेन्द्र कोहली को प्रभावित किया। परम्परागत विचारधारा एवं चरित्रचित्रण से प्रभावित हुए बगैर स्पष्ट एवं सुचिंतित तर्क के आग्रह पर मौलिक दृष्ट से सोच सकना साहित्यिक तथ्यों, विशेषत :ऐतिहासिक-पौराणिक तथ्यों का मौलिक वैज्ञानिक विश्लेषण यह वह विशेषता है जिसकी नींव आचार्य द्विवेदी ने डाली थी और उसपर रामकथा, महाभारत कथा एवं कृष्ण-कथाओं आदि के भव्य प्रासाद खड़े करने का श्रेय आचार्य नरेंद्र कोहली का है। संक्षेप में कहा जाए तो भारतीय संस्कृति के मूल स्वर आचार्य द्विवेदी के साहित्य में प्रतिध्वनित हुए और उनकी अनुगूंज ही नरेन्द्र कोहली रूपी पाञ्चजन्य में समा कर संस्कृति के कृष्णोद्घोष में परिवर्तित हुई जिसने हिन्दी साहित्य को हिला कर रख दिया.

www.ignited.in

कृतित्व:

उपन्यास, कहानी, व्यंग, नाटक, निबंध, आलोचना, संस्मरण इत्यादि गद्य की सभी प्रमुख एवं गौण विधाओं में नरेन्द्र कोहली ने अपनी विदग्धता का परिचय दिया है। उपन्यास विधा पर अद्भुत पकड़ होने के का कारण है नरेन्द्र कोहली की कई विषयों में व्यापक सिद्धहस्तता मानव मनोविज्ञान को वह गहराई से समझते हैं एवं विभिन्न चरित्रों के मूल तत्व को पकड़ कर भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में उनकी सहज प्रतिक्रया को वे प्रभावशाली एवं विश्वसनीय ढंग से प्रस्तुत कर सकते हैं। औसत एवं असाधारण, सभी प्रकार के पात्रों को वे अपनी सहज संवेदना एवं भेदक विश्लेषक शक्ति से न सिर्फ पकड़ लेते है, वरन उनके साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। राजनैतिक समीकरणों, घात-प्रतिघात, शक्ति-संतुलन इत्यादि का व्यापक चित्रण उनकी रचनाओं में मिलता है। भाषा, शैली, शिल्प एवं कथानक के स्तर पर नरेन्द्र कोहली ने अनेक नए एवं सफल प्रयोग किये हैं। उपन्यासों को प्राचीन महाकाव्यों के स्तर तक उठा कर उन्होंने महाकाव्यात्मक उपन्यासों की नई विधा का आविष्कार किया है।

नरेन्द्र कोहली की सिद्धहस्तता का उत्तम उदाहरण है उनके महाउपन्यास 'महासमर' के विस्तृत फैलाव से 'साथ सहा गया दुःख' तक का अतिसंक्षिप्त दृश्यपटल .सैकड़ों पात्रों एवं हजारों घटनाओं से समृद्ध 'महासमर' के आठ खंडों के चार हज़ार पृष्ठों के विस्तार में कहीं भी न बिखराव है, न चरित्र की विसंगतियां, न दृष्टि और दर्शन का भेद .पन्द्रह वर्षों के लम्बे समय में लिखे गए इस महाकाव्यात्मक उपन्यास में लेखक की विश्लेषणात्मक दृष्टि कितनी स्पष्ट है, यह उनके ग्रन्थ "जहां है धर्म, वहीं है जय" को देखकर समझा जा सकता है जो महाभारत की अर्थप्रकृति पर आधारित है। इस ग्रन्थ में उन्होंने 'महासमर' में वर्णित पात्रों एवं घटनाओं पर विचार किया है, समस्याओं को सामने रखा है एवं उनका निदान ढूँढने का प्रयास किया है। महाभारत को समझने में प्रयासशील इस महाउपन्यासकार का यह उद्यम देखते ही बनता है जिसमें उनकी विचार-प्रक्रिया के रेखांकन में ही एक पूरा ग्रन्थ तैयार हो जाता है। साहित्य के विद्यार्थियों और आलोचकों के लिए नरेन्द्र कोहली की साहित्य-सृजन-प्रक्रिया को समझने में यह ग्रन्थ न सिर्फ महत्वपूर्ण है वरन् परम आवश्यक है। इस ग्रन्थ में नरेन्द्र कोहली ने विभिन्न चरित्रों के बारे में नयी एवं स्पष्ट स्थापनाएं दी हैं। उनकी जन-मानस में अंकित छवि से प्रभावित और आतंकित हुए बगैर घटनाओं के तार्किक विश्लेषण से कोहलीजी ने कृष्ण, युधिष्ठिर, कुंती, द्रौपदी, भीष्म, द्रोण इत्यादि के मूल चरित्र का रूढ़िगत छवियों से पर्याप्त भिन्न विश्लेषण किया है।

दूसरे ध्रुव पर उनका दूसरा उपन्यास "साथ सहा गया दुःख" है जो मात्र दो पात्रों को लेकर बुना गया है। उनके द्वारा लिखा गया प्रारम्भिक उपन्यास होने के बावजूद यह हिन्दी साहित्य की एक अत्यंत सशक्त एवं प्रौढ़ कृति है। 'साथ सहा गया दुःख' नरेंद्र कोहली की उस साहित्यिक शक्ति को उद्घाटित करता है। 'सीधी बात' को सीधे-सीधे स्पष्ट रूप से ऐसे कह देना कि वह पाठक के मन में उतर जाए, उसे हंसा भी दे और रुला भी .इस कला में नरेंद्र कोहली अद्वितीय हैं। 'साथ सहा गया दुःख' नरेंद्र कोहली के संवेदनशील पक्ष को उद्घाटित करता है। महादेवी द्वारा 'प्रसाद' के लिए कही गयी उक्ति उनपर बिलकुल सटीक बैठती है :)..."उनके कृतित्व (से प्रमाणित होता है कि उनकी जीवन-वीणा के तार इतने सधे हुए थे कि हल्की से हल्की झंकार भी उसमें प्रतिध्वनि पा लेती थी।"

"यह देख कर मुझे आश्चर्य होता था कि मात्र ढाई पात्रों)पति, पत्नी और एक नवजात बच्ची (का सादा सपाट घरेलू या पारिवारिक उपन्यास इतना गतिमान एवं आकर्षक कैसे बन गया है। अनलंकृत जीवन-भाषा में सादगी का सौंदर्य घोलकर किस कला से इसे इतनी सघन संवेदनीयता से पूर्ण बनाया गया है।"

कोहलीजी का प्रथम उपन्यास था 'पुनरारंभ'. इस व्यक्तिपरक-सामाजिक उपन्यास में तीन पीढ़ियों के वर्णन के लक्ष्य को लेकर चले उपन्यासकार ने उनके माध्यम से स्वतंत्रता-प्राप्ति के संक्रमणकालीन समाज के विभिन्न वर्गों के लोगों की मानसिकता एवं जीवन-संघर्ष की उनकी परिस्थितियों को चित्रित करने का प्रयास किया था। इसके पश्चात् आया 'आतंक'. सड़ चुके वर्तमान समाज की निराशाजनक स्थिति, अत्याचार से लड़ने की उसकी असमर्थता, बुद्धिजीवियों की विचारधारा की नपुंसकता एवं उच्च विचारधारा की कर्म में परिणति की असफलता का इसमें ऐसा चित्रण है जो मन को अवसाद से भर देता है।

नरेन्द्र कोहली की एक बड़ी उपलब्धि है "वर्तमान समस्याओं को काल-प्रवाह के मंझधार से निकाल कर मानव-समाज की शाश्वत समस्याओं के रूप में उनपर सार्थक चिंतन". उपन्यास में दर्शन, आध्यात्म एवं नीति का पठनीय एवं मनोग्राही समावेश उन्हें समकालीन एवं पूर्ववर्ती सभी साहित्यकारों से उच्चतर धरातल पर खडा कर देता है।

रचनाएँ:

यों तो छह वर्ष की आयु से ही उन्होने लिखना प्रारम्भ कर दिया था लेकिन १९६० के बाद से उनकी रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। समकालीन लेखकों से वो भिन्न इस प्रकार हैं कि उन्होने जानी मानी कहानियों को बिल्कुल मौलिक तरीके से लिखा। ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित उनके प्रमुख वृहदाकार उपन्यासों की सूची

नीचे दी गयी है। उनकी रचनाओं का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ है। 'दीक्षा', 'अवसर', 'संघर्ष की ओर' और 'युद्ध' नामक रामकथा श्रृंखला की कृतियों में कथाकार द्वारा सहस्राब्दियों की परंपरा से जनमानस में जमे ईश्वरावतार भाव और भक्तिभाव की जमीन को, उससे जुड़ी धर्म और ईश्वरवाची सांस्कृतिक जमीन को तोड़ा गया है। रामकथा की नई जमीन को नए मानवीय, विश्वसनीय, भौतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। नरेन्द्र कोहली ने प्रायः सौ से भी अधिक उच्च कोटि के ग्रंथों का सृजन किया है।

उपसंहार:-

हिंदी साहित्य में नरेन्द्र कोहली की प्रसिद्धि एक चिन्तक कथाकार के रूप में है| उनकी चिन्तना ऐतिहासिक- पौराणिक कथाओं पर आधृत होते हुए भी अत्यंत प्रासंगिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों के प्रकाश में उभरकर सामने आती है| वे कथानक रुडियो निर्भित नहीं करते वरन रुढियो को तोड़कर एक नितांत मौलिक एवं नूतन दिशा निर्मित करते है| उनके कथ्य का धरातल अतीत कथानको का महासागर होता है| किन्तु उनका चिंतन सीपी में मोती के समान आभामय और तरल होता है| वे कोई वादी साहित्य भी नहीं है| जिन्हें किसी पताका की तलाश हुआ करती है, जिनके तले वे अपनी प्रतिबद्दता को आकार दिया करते है| कोहली तो सामयिक समस्याओ और संदर्भो के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन को नवीन बनाने में प्रयासरत रहते है| यदि वे प्रतिबद्ध है तो केवल मानवता के प्रति| मानवीयता के प्रति प्रतिबद्ध कोहली ने "तोड़ो कारा तोड़ो" जैसी उपन्यास श्रंखला को सर्जित किया|

संधर्व ग्रन्थ सूची

एक व्यक्ति नरेन्द्र कोहली, संपादक: कार्त्तिकेय कोहली, 2000 ई., प्रकाशक : क्रियेटिव बुक कंपनी,

कहानीकार नरेन्द्र कोहली, लेखिका: डॉ॰ सुरैया शेख, 2006 ई., प्रकाशक : विनय प्रकाशन, 3-ए/ 128 हंसपुरम्, नौबस्ताग, कानपुर – 208021

कुछ नरेन्द्र कोहली के विषय में (आत्मकथ्य), 1996 ई., प्रकाशक : पराग प्रकाशन, दिल्ली- 110032

नरेन्द्र कोहली - अप्रतिम कथायात्री, लेखक : डॉ॰ विवेकीराय, 2003 ई., प्रकाशक: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली – 110002

नरेन्द्र कोहली और उनके राम- कृष्ण, लेखिका : डॉ॰ (श्रीमती) मनोरमा मिश्र, 2007 ई. प्रकाशक: वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली- 110002

नरेन्द्र कोहली के राम साहित्य का विशेष अनुशीलन, लेखक : डॉ॰ गिरीशकुमार जोशी, 1997 ई. प्रकाशक: सुप्रिया पब्लिकेशंस, सागर (मध्य प्रदेश)

नरेन्द्र कोहली ने कहा, (नरेन्द्र कोहली के आत्मकथ्य और उनकी रचनाओं में से विचारपूर्ण सूक्तियों का संचयन), संचयन : ईशान महेश,1997 ई., प्रकाशक: शुभम् प्रकाशन, एन/10, उल्लघनपुर, नवीन शाहदरा, दिल्ली- 110032

नरेन्द्र कोहली :चिंतन और सृजन, लेखक: डॉ॰ सतीश पांडेय, 2002 ई. प्रकाशक: प्रज्ञा प्रकाशन, ए- 18, संतोषी मां अपार्टमेंट, विट्ठलवाडी, कल्याण (पूर्व) – 421306

नरेन्द्र कोहली: विचार और व्यंग्य, लेखक : डॉ॰ सुरेश कांत, 2000 ई., प्रकाशक : वाणी प्रकाशन,21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली/ 110002

नरेन्द्र कोहली: व्यक्तित्व और कृतित्व, संपादक: नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, 1985 ई. प्रकाशक: पराग प्रकाशन, 3/114, कर्ण गली, विश्वासनगर, शाहदरा, दिल्ली- 110032

पौराणिक उपन्यास: समीक्षात्मक अध्ययन, (नरेन्द्र कोहली के तीन उपन्यासों - 'अभिज्ञान','तोड़ो कारा तोड़ो' तथा 'प्रच्छन्न' का शोधपरक अध्ययन), लेखक-त्रय: डॉ॰ हितेन्द्र यादव, डॉ॰ कविता सुरभि, सुनीता सक्सैना, 2000 ई., प्रकाशक : वाणी प्रकाशन,21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली/ 110002

Corresponding Author

Manoj Tiwari*

Hindi Litrechure

E-Mail – suresh.malviya01@gmail.com